

संवेगात्मक बुद्धि तथा पारिवारिक वातावरण के बीच अंतर संबंध

श्रीमती मधु धाकड़, शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र), आई.आई.एस. (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी), जयपुर

प्रस्तावना

शिक्षा आदिकाल से चली आ रही मानव व्यवहार को परिमार्जित करने वाली प्रक्रिया है। शिक्षा मानव जीवन के विकास की वह प्रक्रिया है जो शैशवावस्था से प्रारंभ होकर पड़ा अवस्था तक चलती रहती है। शिक्षा का अर्थ बालकों की आंतरिक अथवा अन्तःनिहित क्षमताओं का विकास करना है। प्लेटो ने शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास की प्रक्रिया को ही शिक्षा के रूप में परिभाषित किया है। शिक्षा किसी समाज में सदैव चलने वाली सोउद्देश्य सामाजिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य के ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है। पेस्टालॉजी ने शिक्षा के बारे में कहा है— "शिक्षा मनुष्य की संपूर्ण शक्तियों का प्राकृतिक प्रगतिशील और समग्र विकास करती है।"

